

## वीच्यः ४०४३ व्यः १ क्रियः श्री १ क्रियः स्वाया क्ष्या १० क्ष्या स्वायः स्वाया वित्रायः स्वाया क्ष्या १० क्ष्या स्वायः स्वाया वित्रायः स्वाया क्ष्या १० क्ष्या स्वायः स्वाया वित्रायः स्वाया क्ष्यः १००० क्ष्या १०० क

विर्याश्वर्ते -> ही स्त्रिं स्त्राम्रिं निर्याक्ष्या स्वाप्ति । विर्याम् विर्यास्त्र में वर्षे स्वरास्त्र हिन् १०

- म्प्राच्या १० व्यक्ष स्थान्त्र । व्यक्ष स्थान्त्र व्यक्ष स्थान्त्र व्यक्ष स्थान्त्र । व्यक्ष स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्य
  - १ वर्षादारा वर्षात्र स्वर्गेत् केत्र में सक्षिता ती वृत्य सम्ब्रीता न स्वर न विदे मूर्य सर्मित स्वर्थ में विश्
  - १ श्रे:नेश पॅव र्स्सन नार्स नेश नवे ने नित नार पेव नश
  - द्र वर्ते न सेवे न वि इवे र्वेन न विश्व न न विश्व विषा व र्वेन न
  - < रुअन्त्रकान्त्रेन्यान्द्रियाः प्रतिन्त्रम्यान्ते व्याप्तान्त्रम्या
  - ५ पूर्याम्बर्सियात्रेश्वराक्ष्याः हीयः ततुः हीः सक्यी
  - ८ वित्रस्त्राची कुन्या वर्षेत्रने अपाद्या वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र के के कार वी वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र
- यक्षा क्री. श्री. संस्कृत क्षेत्र क्ष
- यश्ची व्यन्त्रिया अर्घेत् प्रश्वेत प्र
- म्प्रम्या १० व्यक्षः वहत् मुन्यः नुन्यः नुर्वेषः पदे मुन्यक्षः भूनः केना विष्यः १५० व्यक्षः सेन्दिन १०

## को व्यूर्श्यासकूर्याची पश्रिर्व प्रमा बन्द्र विशासदी प्रमा की प्रमा के प्रमा के प्रमा की प्रम की प्रमा की प्रम की प्रम की प्रम की प्रम की प्रम की प्रमा की प्रमा की प्रमा की प्रम की

Even today, Tibetans in Tibet live in constant fear and the Chinese authorities remain constantly suspicious of them. Today, the religion, culture, language and identity, which successive generations of Tibetans have considered more precious than their lives, are nearing extinction; in short, the Tibetan people are regarded like criminals deserving to be put to death. The Tibetan people's tragedy was set out in the late Panchen Rinpoche's 70,000-character petition to the Chines government in 1962. He raised it again in his speech in Shigatse in 1989 shortly before he died, when he said that what we have lost under Chinese communist rule far outweighs what we have gained. Many concerned and unbiased Tibetans have also spoken out about the hardships of the Tibetan people. Even Hu Yaobang, the Communist Party Secretary, when he arrived in Lhasa in 1980, clearly acknowledged these mistakes and asked the Tibetans for their forgiveness. Many infrastructural developments such as roads, airports, railways, and so forth, which seem to have brought progress to Tibetan areas, were really done with the political objective of sinicising Tibet at the huge cost of devastating the Tibetan environment and way of life.

\* • • • नने सेन सप्तरेया • • • • \*